प्रो अच्युत सामंत के जन्मदिवस पर विशेष

नूतन वर्ष:2021 को ' प्रेम-वर्ष ' के रूप में मनायें!: प्रो अच्युत सामंत

''जीवन की सबसे बड़ी समस्या है अधूरे मन से किया गया अधूरा प्रयास। हम अपना काम पूरे मन से क्यों न करें?''- यह सोच है भुवनेश्वर, ओडिशा स्थित विश्व के दो डीम्ड विश्वविद्यालयों : कीट-कीस के प्राणप्रतिष्ठाता तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रो अच्युत सामंत का। इसीलिए तो प्रतिभा, शील और साधन संपन्न श्रद्धावान प्रो अच्युत सामंत के पारदर्शी व्यक्तित्व को पूरी दुनिया सलाम करती है। उनको अपना आदर्श मानती है। उनके पद-चिह्नों पर चलने के लिए कृतसंकल्प होती है। युवावर्ग उनको अपना आदर्श मानते हैं। आध्यात्मिक जगत के साधु-संत-महात्मा उनको नई सदी का आलोक पुरुष मानते हैं। संयोगवश उनका जन्मदिन जनवरी महीने में पड़ता है लेकिन स्वयं प्रो अच्युत सामंत यह नहीं जानते है कि उनका जन्म दिन कब है। उन्होंने बताया कि जब वे लगभग पांच साल के थे तो स्कूल में दाखिला लेते समय उनके प्राइमरी टीचर ने उनका नामकरण किया ''अच्युतानन्द सामंत'' के रूप में तथा जन्म की तारीख २०जनवरी दर्ज कर दी स्कूल के खाते में। ५५वर्षीय प्रो सामंत का यह कहना है कि बचपन से लेकर २५साल तक उनका समय कठोर आर्थिक संघर्षों के बीच स्व अध्ययन में गुजरा। अगला २५ साल अपने द्वारा स्थापित 'कीस' के लाखों अभावग्रस्त आदिवासी बच्चों को केजी से पीजी तक निःशुल्क पढ़ाने में तथा उनको स्वावलंबी मनाने में लगा। पिछले लगभग चार -पांच सालों से वे लोकसेवा में अपने आपको लगाये हुए हैं। उनके लिए जाड़ा, गर्मी, बरसात, सभी समान है। उनके प्रतिदिन की दिनचर्या में १८ घण्टे सुरक्षित है उनके द्वारा स्थापित विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय ''कीस '' के बच्चों के लिए। प्रत्येक महीने की पहली तारीख को श्रीजगन्नाथ धाम पुरी जाकर वे महाप्रभु जगन्नाथ के दर्शन अवश्य करते हैं। प्रत्येक महीने के अंतिम शनिवार को पौराणिक काल के सिरुली हनुमान मंदिर जाकर सिरुली हनुमान का आशीर्वाद वे अवश्य लेते हैं। उनके पास इतना भी समय नहीं है कि वे प्रत्येक दिन कुछ न कुछ अध्ययन कर सकें। लेकिन सच तो यह है कि प्रो सामंत मन, विचार और कर्म से एक वास्तविक संत हैं। २०२१ नव वर्ष के उपलक्ष्य में उन्होंने सबसे पहले ''युवा'' शब्द को स्पष्ट किया। उनके अनुसार जो सजग और सचेष्ट है वह युवा है। जो सकारात्मक सोच के साथ सत्य से साक्षात्कार करता है वह युवा है। जो अपने भौतिक सुखों की कामनाओं पर नियंत्रण करता है वह युवा है। जो अपने आपको समझ लेता है वह युवा है तथा जो अपने अन्दर झांककर अपनी बुराइयों को दूर करने का सतत प्रयास करता है, वह युवा है। प्रो सामंत अपने

उनके अनुसार जो सजग और सचेष्ट है वह युवा है। जो सकारात्मक सोच के साथ सत्य से साक्षात्कार करता है वह युवा है। जो अपने भौतिक सुखों की कामनाओं पर नियंत्रण करता है वह युवा है। जो अपने आपको समझ लेता है वह युवा है तथा जो अपने अन्दर झांककर अपनी बुराइयों को दूर करने का सतत प्रयास करता है, वह युवा है। प्रो सामंत अपने आपको स्वयं एक युवा बताया जो आजीवन एक शिष्य बनकर सभी के अन्दर की अच्छाइयों को अपनाकर अपने लोकसेवा की जिम्मेदारी को वखूबी निभाते हैं ।

आपको स्वयं एक युवा बताया जो आजीवन एक शिष्य बनकर सभी के अन्दर की अच्छाइयों को अपनाकर अपने लोकसेवा की जिम्मेदारी को बखूबी निभाते है । उन्होंने युवाओं को तीन सलाह दी। कोई भी शुभ कार्य जितनी जल्दी हो सके उसे पूरे आत्मविश्वास के साथ अवश्य पूरा करें। आज के प्रतियोगिता के युग है अपने प्रतिद्वन्द्वी को कभी कम नहीं आंकें तथा अपने जीवन की कामयाबी का राज किसी को कभी भी नहीं बतायें। प्रो सामंत ने सफलता के कुल ८ मंत्र बतायेः जीवन में लक्ष्य का निर्धारण, उसके लिए कर्मयोगी बनना, उचित अवसर की प्रतीक्षा करना, सदैव आशावादी बनना, अपने जीवन से आलस्य का पूरी तरह से त्याग करना, निन्दा-ईर्ष्या से बचना, उन्हीं की तरह ही निःस्वार्थ भाव से आजीवन दाता बने रहना। अपने आत्मबल तथा आत्मशक्ति पर भरोसा रखना और उसकी श्रीवृद्धि के लिए आजीवन स्वचिंतन करते रहना। अपनी वाणी की शक्ति को मजबूत बनाना तथा अपनी प्रकृति तथा स्वभाव में आवश्यकतानुसार सतत बदलाव लाना। जीवन में आनेवाली बाधाओं का धैर्य से और डटकर मुकाबला करना। सच तो यह है कि ५५वर्षीय प्रो अच्युत सामंत की निःस्वार्थ सेवा से प्रभावित होकर देश-विदेश के अनेक संत-महात्मागण स्वयं भुवनेश्वर आकर उनको अपना आशीष प्रदान करते हैं। प्रो सामंत ने युवाओं से यह अपील की कि वे मन लगाकर पढें। अपने पैरों पर खडे हों। पूरे संतोष और धैर्य के साथ जीवन जीयें। उन्होंने एक रोचक उदाहरण दिया कि सिंह को जंगल का राजा बनाने के लिए किसी प्रकार के अभिषेक की जरुरत नहीं पड़ती है। अपने गुण और पराक्रम के बल पर ही सिंह स्वयं जंगल का राजा बनता है। इसे युवावर्ग को समझने की जरुरत है। युवाओं को समुद्र की लहर की तरह परिवर्तन, बहाव तथा नवीनता को अपनाने की जरुरत है तथा उनके द्वारा २०२१ वर्ष को जिसे प्रो अच्युत सामंत ने प्रेम-वर्ष के रुप में घोषित किया है , उसे अपनाने की सख्त आवश्यकता है।

प्रस्तुतिः अशोक पाण्डेय

कीस ने आयोजित किया वर्चुअल मेगा अभिभावक सम्मेलन

२७ दिसंबर को भुवनेश्वर स्थित विश्व के सबसे बड़े आदिवासी आवासीय विद्यालय द्वारा वर्चुअल मेगा अभिभावक सम्मेलन २०२० आयोजित किया गया। सम्मेलन में लगभग एक लाख से अधिक कीस एल्यूमिनी के छात्र-छात्राओं, अभिभावकों तथा कीस के शुभचिंतकों आदि ने हिस्सा लिया। अपने संबोधन में कीट-कीस के प्राणप्रतिष्ठाता तथा कंधमाल लोकसभा सांसद प्रो अच्युत सामंत ने सबसे पहले कीस के ३०हजार से भी अधिक बच्चों तथा उनके अभिभावकों का हालचाल जाना। प्रो सामंत को तब अत्यधिक खुशी का अहसास हुआ जब उनके कीस के बच्चों के अभिभावकों ने उन्हें यह बताया कि उनके बच्चे गांव पर रहकर पढ़ते भी हैं तथा खेती से लेकर अनेक सामाजिक कार्यों में उनका सहयोग भी करते हैं। प्रो अच्युत सामंत ने अभिभावकों को यह बताया कि शिक्षा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जिसको अपनाकर उनके बच्चे अपने पैरों पर खड़े हो सकते हैं। अपने व्यक्तित्व का पूर्णतः विकास कर सकते हैं तथा गरीबी का उन्मूलन कर सकते हैं। इसलिए कोरोना संक्रमण के वक्त भी कीस के बच्चों को अपनी ऑनलाइन पढ़ाई के साथ-साथ अपने अभिभावकों के कामों में सहयोग देना चाहिए।

गौरतलब है कि मार्च, २०२० से लगातार प्रो अच्युत सामंत ने कीस के तीस हजार से भी अधिक बच्चों को नियमित रुप से उनको अपने अपने गृहगांव पर सूखा खाद्यसामग्री से लेकर उनके पठन-पाठन आदि से जुड़े समस्त संसाधन निःशुल्क उपलब्ध कराते हैं। अभिभावक सम्मेलन को कीस डीम्ड विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो सस्मितारानी सामंत, डा पी के राउतराय कीस डीम्ड विश्वविद्यालय के कुलसचिव, श्री निरंजन बिसी, आदिवासी महासंघ पश्चिम ओडिशा के सेकरेटरी जेनरल, श्री प्रभाकर ओराम, झारसुगुड़ा, लंबोदर सिंह, मयूरभंज, कमरध्वज नायक केंदुझर, घासीराम समृतिका रायगड़ा, परमानंद माझी, कालाहाण्डी तथा श्री सुशील देहुरु, बौध आदि ने सम्मेलन को संबोधित किया। पूरे कार्यक्रम का संचालन श्री प्रमोद कुमार पात्र कीस के डेपुटी सीइओ कीस ने किया।

श्री अशोक पाण्डेय जी को जन्मदिन की शुभकामानाएं देते हुए प्रो अच्युत सामंत जी।